श्री नवदेवता विधान

रचयिता
मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज

प्रकाशक
श्री जैनोदय विद्या समूह

कृति	:	श्री नवदेवता विधान
आशीर्वाद	:	आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	द्वितीय, 2018
प्रसंग	:	भारत बोलो वर्षायोग 2018 अंकुर कॉलोनी, मकरोनिया, सागर (म.प्र.)
आवृत्ति	:	1100
लागत मूल्य	:	20/-
प्राप्ति स्थान	:	बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना 94251-28817 सौरभ जैन, (पवाजी) कड़ेसरा 70075-38549
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

नवदेवदा संथुदि

(चौपाई)

देवराय णव देवा जयदि।
भत्तजणाणं पावं खयदि॥
अरिहंता घण घाइ विणासी, सिद्धा णिक्कम्मा सिववासी॥
आइरिया भव लय जय करदि, देवराय णव देवा जयदि॥१॥
उवझाया सुददेव सरूवा, णमो लोए साहूणं रूवा॥
पुज्ज धम्म-चक्कं दुह खयदि, देवराय णव देवा जयदि॥२॥
जिण-गंथा णिज गंथी हरदि, चेइयाणि चिण बिंबा करदि॥
मंदराणि भव-भमणा हरदि, देवराय णव देवा जयदि॥३॥
देदि देवदा सासय-महलं, पढमं-पढमं होइ मंगलं॥
तह्मा गिहभय बाहा हरदि, देवराय णव देवा जयदि॥४॥

===

नव देवता संस्तुति

(चौपाई)

देवराज नवदेवों की जय,
भक्तजनों के करे पाप क्षय॥
प्रभु अरिहंत घातिया नाशी, सिद्ध कर्म हर मोक्ष निवासी।
गुरु आचार्य करें भव पर जय, देवराज नवदेवों की जय॥१॥
उपाध्याय श्रुत देव रूप हो, नमन लोक के साधु रूप को।
धर्म चक्र शुभ करता दुख क्षय, देवराज नवदेवों की जय॥२॥
निज ग्रंथी जिनग्रंथ नशाते, चैत्य हमें चिन्मूर्त बनाते।
जिनमंदिर भव भ्रमण करें क्षय, देवराज नवदेवों की जय॥३॥
शाश्वत महल देवता देते, प्रथम-प्रथम सो मंगल होते॥
इनसे गृह भय बाधा हों क्षय, देवराज नवदेवों की जय॥४॥

===

श्री नवदेवदा भत्ति

(आर्या)

णमो अरिहंताणं, सिद्ध-आइरियाणं उवज्झायाणं।
साहूणं सव्वलोए, धम्मं गंथं बिम्बं मंदिराणं च॥१॥
अरिहंता छैयाला, सव्व दोसा खविय घण घाइ कम्मा य।
वंदिय सद इंदाणं, सव्वण्हु वीयराय मंगला णिच्चं॥२॥
अट्ठेवगुणा सिद्धा, णट्ठ कम्म मला तीद संसारा।
परमप्पा सुद्धप्पा, लोए सिरे वासिणो मंगला णिच्चं॥३॥
आइरिया छत्तीसा, दियंवरा तित्थ सरूव होंति गुरुणा।
सिक्खा दिक्खा दत्ता, सुसंघ संचालिया मंगला णिच्चं॥४॥
उवझाया पणवीसा, उक्कस्सेण जाणगो पुव्वंगाणं।
धम्मुवदेसो कुसलो, जहण्णेण सुद देव मंगला णिच्चं॥५॥
साहूणा अडवीसा, सुत्तज्झाणी परमप्पज्झाणी य।
दंसण रूवा होंति, तह्मा णमो लोए सव्वसाहूणं॥६॥
तित्थयर भासिधम्मं, णिग्गंथ-देवेहिं गंथियं गंथा।
जिणमंदिर-बिम्बाणि, होंति पुज्ज णव देवदा णमो तेसिं॥७॥

(अंचलिका)

इच्छामि भंते! णवदेवदा भत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेऊं गुण सहिदा सव्व अरिहंत-सिद्ध-आइरिय-उवज्झाय-साहू-धम्म-गंथ-बिम्ब मंदिराणि णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ गमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झम्।

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनायें गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गये जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमायें जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलायें।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लायें॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसायें, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगायें, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलायें, हम जिनके आंसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के कांटे, तजने पुष्पों को लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटायी।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ायें।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलायें, हम काजल जिन्हें लगायें।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखायें॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलायें।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिरायें, पीछे से चाकू घौंपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

बदनाम हुये हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लायें।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबायें।
फिर देकर दाग जलायें, हम जिन पर प्राण लुटायें॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ायें।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वंदन हमारे॥१॥

परम् पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥२॥

दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुये पूर्ण सपने॥३॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानंद हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शांति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥४॥

जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥५॥

यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥६॥

जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोस्तु सदा ही इन्हें हो॥७॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥८॥

हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥९॥

(दोहा)

मुक्ति रमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पाञ्जलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

अर्घ्यावली

अरिहन्त देव के ४६ मूलगुण संबंधी अर्घ्य

जन्म के १० अतिशय (चौपाई)

देह जन्म से सुन्दर इतनी, सुन्दरता नहिं सुन्दर जितनी।
जिन-दर्शन से सुन्दर तन हो, सो नमोस्तु सब अरिहन्तन को॥१॥

ॐ ह्रां सुन्दर देह प्रदाता सुन्दर देहस्थ श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

देह जन्म से इतनी महके, जितने इत्र न चन्दन महके।
जिन-श्रद्धा से सुरभित तन हो, सो नमोस्तु सब अरिहन्तन को॥२॥

ॐ ह्रां दुर्गंध विकृति विनाशन समर्थ अतिशय सुगन्धित देहस्थ श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

नहीं जन्म से मैल-पसीना, तीर्थंकर तन रत्न नगीना।
जिन-भक्ति से तन कुन्दन हो, सो नमोस्तु सब अरिहन्तन को॥३॥

ॐ ह्रां असंतुलन विकृति विनाशन समर्थ स्वेद रहित देहस्थ श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

मल मूत्रों बिन काया होती, दिव्य अलौकिक जैसे मोती।
जिनपूजन से निर्मल तन हो, सो नमोस्तु सब अरिहन्तन को॥४॥

ॐ ह्रां तन-मन मलिनता विनाशन समर्थ मल-मूत्र रहित देहस्थ श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

हित-मित मिश्रित जिनवर वाणी, सदा जन्म से हो कल्याणी।
जिनवाणी से सिद्ध वचन हों, सो नमोस्तु सब अरिहन्तन को॥५॥

ॐ ह्रां वचन कटुता विनाशन समर्थ हित-मित-प्रिय वादक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

तीर्थंकर की देह जन्म से, अतुल महाबलवान अन्य से।
जिनसेवा से अतुल्य बल हो, सो नमोस्तु सब अरिहन्तन को॥६॥

ॐ ह्रां तन-मन दुर्बलताविनाशन समर्थ अतुलबलवान श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

सदा प्रेम वात्सल्य अन्य से, अतः रक्त हो श्वेत जन्म से।
जिनचिन्तन से विश्व प्रेम हो, सो नमोस्तु सब अरिहन्तन को॥७॥

ॐ ह्रां प्रेम दया विकासक श्वेत रुधिरवान श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

देह जन्म से बड़ी विलक्षण, एक हजार आठ शुभ लक्षण।
जिनवंदन से शुभ लक्षण हो, सो नमोस्तु सब अरिहन्तन को॥८॥

ॐ ह्रां शुभ शकुन विकासन समर्थ शुभलक्षणमय देहस्थ श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

नापतौल में यथास्थान हो, प्रभु का समचतुष्क संस्थान हो।
जिनअर्चन से सुडौल तन हो, सो नमोस्तु सब अरिहन्तन को॥९॥

ॐ ह्रां अंगोपांग विकृति विनाशन समर्थ समचतुरस्त्रसंस्थानवान् श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

देह सुकोमल मक्खन जैसी, पर मजबूत बहुत हीरे सी।
जिनमंथन से शुभ संहनन हो, सो नमोस्तु सब अरिहन्तन को॥१०॥

ॐ ह्रां सहनशीलताविकासनसमर्थ वज्रवृषभनाराचसंहननवान श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

केवलज्ञान के १० अतिशय

सौ-सौ योजन पार नाथ के, सुभिक्षता हो प्रलय नाश के।
जिनकीर्तन से सुख क्षण-क्षण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥११॥

ॐ ह्रां विश्व विद्रोह विनाशक सुभिक्षत विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

धनुष पाँच सौ ऊपर नभ में, पहुँचे कमल विहारी नभ में।
जिनअर्पण से उदार मन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥१२॥

ॐ ह्रां अधोगमन विनाशक नभोगमन विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

एक मुखी के चतुर्मुखी हों, भक्त ताकते खुशी-खुशी हों।
जिनदर्पण से शुचि चेतन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥१३॥

ॐ ह्रां चतुर्मुखी विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

अरिहन्तों का वास जहाँ हो, वहाँ न हिंसा दया सदा हो।
जिनचरणों से वध न हनन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥१४॥

ॐ ह्रां समस्त विध हिंसा विनाशक अहिंसा विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

प्रभु अरिहन्त जहाँ रम जाते, वहाँ कभी उपसर्ग न आते।
जिनशरणों से कष्ट शमन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥१५॥

ॐ ह्रां पीड़ा कष्ट विनाशक मैत्री भाव विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

कवलाहार के न भोजन हों, नोकर्मों के भोज्य भजन हों।
जिनआगम से आत्म रमण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥१६॥

ॐ ह्रां आहारविघ्न विनाशक संतुष्टि विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

तीर्थंकर प्रभु केवलज्ञानी, सभी कलाओं के हो स्वामी।
जिनशासन से शुभ जीवन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥१७॥

ॐ ह्रां कुविद्या विनाशक सुविधा विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

बिना बढ़े नख केश शोभते, अरिहन्तों को भक्त खोजते।
जिन से परमौदारिक तन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥१८॥

ॐ ह्रां अस्थि रोग विनाशक आस्थायोग विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

अपलक प्रभु अरिहन्त सुभीते, पलक झपकना आलस जीते।
जिनतीरथ से ज्ञान नयन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥१९॥

ॐ ह्रां दृष्टिविकार विनाशक आत्मदृष्टि विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

परमौदारिक तन की माया, प्रभु की होती कभी न छाया।
जिनमूरत से विभ्रम कम हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥२०॥

ॐ ह्रां छाया माया भय विनाशक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

देवकृत १४ अतिशय

अर्द्धमागधी जो ओंकारी, भाषा समझें सब संसारी।
जिनआज्ञा से ऊर्ध्व गमन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥२१॥

ॐ ह्रां होंठ-कण्ठ तालु विकार विनाशक दिव्य देशना विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

समवसरण में मैत्री होती, शत्रु भाव बिन जलती ज्योति।
जिनमहिमा से वैर हरण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥२२॥

ॐ ह्रां ईर्ष्याभाव विनाशक मैत्रीभाव विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

ग्रीष्म शीत ना धूम्र धूलियाँ, दशों दिशा में दीपावलियाँ।
जिनपद रज से समवसरण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥२३॥

ॐ ह्रां दिग्भ्रम विनाशक दिग्दर्शन विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

शरद काल में मौसम जल ज्यों, करते देव गगन निर्मल त्यों।
जिनशांति से अशांति शमन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥२४॥

ॐ ह्रां अशांति विनाशक शांति विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

एक साथ सब फूलें फलतीं, ऋतुयें प्रभु को देख मचलतीं
जिनआश्रय से आत्म मगन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥२५॥

ॐ ह्रां प्रकृति प्रकोप विनाशक संस्कृति प्रभाव विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

इक-इक योजन तक भू ऐसी, चम-चम चमके दर्पण जैसी।
जिनआलय से आत्म रतन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥२६॥

ॐ ह्रां भू-विकार विनाशक स्वयंभू प्रभाव विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

कुल दो सौ पच्चीस कमल के, चलते बीचों बीच कदम से।
जिनचर्या से मोक्ष गमन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥२७॥

ॐ ह्रां पद विकार विनाशक जिनपद विहार विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

जिन शासन जयवंत सदा हो, जय-जय नभ में देव कथा हो।
जिन की जय से जय चेतन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥२८॥

ॐ ह्रां पराजय विनाशक विजय विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

समवसरण में मन्दी-मन्दी, पवन बहे अनुकूल सुगंधी।
जिनचर्चा से शुद्ध चरण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥२९॥

ॐ ह्रां आँधी तूफान विनाशक आप्त श्रद्धान विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

रिमझिम-रिमझिम जल की वर्षा, मंद सुगंधित खुश-खुश नासा।
जिनभावन से शिव साधन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥३०॥

ॐ ह्रां वर्षा विकृति विनाशक धर्मवर्षा संस्कृति विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

गड्ढे कंकड़ बिन भू-तल हो, देव करें यों ज्यों मखमल हो।
जिन की नुति से निज उन्नति हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥३१॥

ॐ ह्रां वेदना विनाशक साधना विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

समवसरण अरिहन्त जहाँ हों, भक्तों को स्वानंद वहाँ हो।
जिननंदन से अभिनंदन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥३२॥

ॐ ह्रां विषयानंद विनाशक चिदानंद विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

हजार आरे सहित अग्र हो, ओज तेजमय धर्मचक्र हो।
जिनचक्र से सिद्धचक्र हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥३३॥

ॐ ह्रां कर्मचक्र विनाशक धर्मचक्र विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

छत्र चँवरमय अष्टद्रव्य जो, शुभ शोभित या चलें अग्र हो।
जिन मंगल से मलगालन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥३४॥

ॐ ह्रां अभव्यता विनाशक भव्यता विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

<u>अनन्तचतुष्टय</u>

ज्ञानावरणी सब हर डाला, पाया केवलज्ञान उजाला।
जिनरवि से अज्ञान हरण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥३५॥

ॐ ह्रां अज्ञान विनाशक ज्ञान विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

सकल दर्शनावरणी हरके, अनन्तदर्शन पाया निज से।
जिनदर्शन से निजदर्शन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥३६॥

ॐ ह्रां अदर्शन विनाशक सम्यग्दर्शन विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

मोहनीय का नशा उतारा, अनन्त सुख सम्यक् उर धारा।

जिनमोहन से निज शोधन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥३७॥

ॐ ह्रां मोह राग विनाशक सुख संतोष विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

अन्तराय की जीते पीड़ा, अनन्तवीर्य का पाये हीरा।
जिनशक्ति से विघ्नहरण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥३८॥

ॐ ह्रां अन्तराय विघ्न विनाशक आत्मपौरुष विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

अष्ट-प्रातिहार्य

अशोक तरु दुख शोक मिटाता, भक्तजनों को छाँव दिलाता।
जिनछाया से शोक हरण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥३९॥

ॐ ह्रां दुख शोक विनाशक सुख साम्राज्य विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

पुष्पवृष्टि नभ से सुर करते, दिव्य वचनसम मोती झड़ते।
जिनवर्षा से शुचि चेतन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥४०॥

ॐ ह्रां जलप्रकोप विनाशक निजस्वरूप विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

धवल चँवर जो देव ढुराते, भक्त नम्र हो ऊपर जाते।
जिन प्रणाम से उच्चासन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥४१॥

ॐ ह्रां अविनय भाव विनाशक विनयभाव विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

भामण्डल सब भेद मिटाता, सात-सात भव के झलकाता।
जिनरागी से राग हनन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥४२॥

ॐ ह्रां भेद-भाव विनाशक भेद-विज्ञान विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

दुन्दुभि बाजा धर्मराज का, ढोल बजाता मृत्युराज का।
जिनकी ध्वनि से तत्त्व यतन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥४३॥

ॐ ह्रां मृत्युभय विनाशक मृत्युंजय विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

सूर्य ताप त्रय छत्र हटाते, त्रय जय के प्रभु तुम्हें बताते।
जिनसंस्तव से ताप शमन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥४४॥

ॐ ह्रां समस्या विनाशक तपस्या विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

विशद दिव्य ध्वनि चिदानंद दे, स्वर्ग मोक्षपथ धर्म तत्त्व दे।
जिनगरजन से अरिखण्डन हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥४५॥

ॐ ह्रां विष विनाशक जिनामृत विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

रत्न सिंहासन पर प्रभु सोहें, विश्व विजेता हमको मोहें।
जिनमन्त्रों से सिद्ध शरण हो, सो नमोऽस्तु सब अरिहन्तन को॥४६॥

ॐ ह्रां दरिद्रता विनाशक जिनरत्न विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

(दोहा)

घातिकर्म को नाशकर, पाये गुण छ्यालीस।
ऐसे प्रभु अरिहन्त को, हो नमोस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रां समस्त आपत्ति-आपदा पद विनाशक सर्व पूज्य पद विकासक श्री अरिहन्त देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

श्री सिद्धदेव के आठ मूलगुण संबंधी अर्घ्य

(सखी)

तज मोहनीय की पीड़ा, पाये सम्यक् गुण हीरा।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥१॥

ॐ ह्रीं मोहभ्रम हारी सम्यक् गुण धारी श्री सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

सब ज्ञानावरणी नाशा, तब केवलज्ञान प्रकाशा।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥२॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिर हारी अनन्तज्ञान गुण धारी श्री सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

दर्शन आवरणी हारी, जय अनन्तदर्शन धारी।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥३॥

ॐ ह्रीं कुदर्शनहारी अनन्तदर्शन गुण धारी श्री सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

सब अन्तराय को मारे, निज अनन्तवीर्य उभारे।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥४॥

ॐ ह्रीं अन्तरायहारी अनन्तवीर्य गुण धारी श्री सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

प्रभु नाम कर्म के भेत्ता, सूक्ष्मत्व गुणों के नेता।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥५॥

ॐ ह्रीं नामकर्म हारी सूक्ष्मत्व गुण धारी श्री सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

प्रभु आयु कर्म नशाये, अवगाहनत्व गुण पाये।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥६॥

ॐ ह्रीं आयुकर्म हारी अवगाहनत्व गुण धारी श्री सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

प्रभु गोत्र कर्म के नाशी, अगुरुलघुत्व गुण वासी।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥७॥

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म हारी अगुरुलघुत्व गुण धारी श्री सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

प्रभु वेदनीय दुख हर्त्ता, अव्याबाधत्व सुख धर्त्ता।
सिद्धों के लोक चलो रे, जय बोल नमोस्तु करो रे॥८॥

ॐ ह्रीं वेदनीय वेदना हारी अव्याबाधत्व गुण धारी श्री सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

(दोहा)

आठ कर्म को काटकर, प्राप्त किये गुण आठ।
सब सिद्धों को नमोस्तु कर, 'सुव्रत' के हों ठाठ॥

ॐ ह्रीं कर्मरूप संसार चक्रहारी ऋद्धि-सिद्धि सर्वसौख्यकारी श्री अनन्तानन्तसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

श्री आचार्य देव के ३६ मूलगुण संबंधी अर्घ्य

बारह तप (हाकलिका)

चउ विध का भोजन तज के, करें तपस्या तप करके।
अनशन तप आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥१॥

ॐ ह्रूं धैर्यदायक अनशन तपोगुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निजी भूख से कम खाना, ऊनोदर यह तप माना।
ऐसा तप आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥२॥

ॐ ह्रूं आसक्ति नाशक अवमौदर्य तपोगुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

विधि से भोजन या अनशन, वृत्तिपरिसंख्यान वचन।
सम्यक् तप आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥३॥

ॐ ह्रूं दैन्यभाव हर्त्ता वृत्तिपरिसंख्यान तपोगुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

षट् रस त्याग करें भोजन, रसपरित्याग कहें भगवन्।
उत्तम तप आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥४॥

ॐ ह्रूं रसासक्तिहर्त्ता रसपरित्याग तपोगुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्जन में रहना सोना, विविक्त शैय्यासन माना।
साँचा तप आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥५॥

ॐ ह्रूं विश्वद्वन्द्वहर्त्ता विविक्तशैयासन तपोगुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

तप से तन को दिये सजा, चेतन बगिया लिये सजा।
कायक्लेश आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥६॥

ॐ ह्रूं विश्वक्लेशहर्त्ता कायक्लेश तपोगुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

दोष व्रतों में गर आयें, निंदा गर्हा करवायें।
प्रायश्चित्त आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥७॥

ॐ ह्रूं विश्वदोषहर्त्ता प्रायश्चित्त तपोगुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

पूज्य जनों का चार तरा, आदर करना विनय कहा।
श्रेष्ठ विनय आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥८॥

ॐ ह्रूं उपहासहर्त्ता विनय तपोगुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

संत त्यागियों की सेवा, मोक्षमार्ग का तप मेवा।
वैयावृत्त आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥९॥

ॐ ह्रूं विश्वसंकटहर्त्ता वैयावृत्त तपोगुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

आलस तज अध्याय पढ़ें, पाँच तरह स्वाध्याय करें।
स्वाध्याय तप आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥१०॥

ॐ ह्रूं दुर्बुद्धिहर्त्ता स्वाध्याय तपोगुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

तन से पूर्ण ममत्व तजें, परमातम का तत्त्व भजें।
तप व्युत्सर्ग आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥११॥

ॐ ह्रूं सम्मोहनहर्त्ता व्युत्सर्ग तपोगुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

एक तत्त्व में चित्त धरें, तप का उपसंहार करें।
शुद्ध ध्यान आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥१२॥

ॐ ह्रूं दुर्ध्यानहर्त्ता ध्यान तपोगुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

दसलक्षण धर्म

कटु वाणी उपसर्ग सहें, निज में उत्तम क्षमा धरें।
क्रोध त्याग आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥१३॥

ॐ ह्रूं आक्रोशहर्त्ता उत्तमक्षमाधर्मधुरन्धर श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

ज्ञानादिक मद त्याग करें, उत्तम मार्दव धर्म धरें।
मान त्याग आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥१४॥

ॐ ह्रूं अभिमानहर्त्ता उत्तममार्दवधर्मधुरन्धर श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

कथनी करनी एक करें, उत्तम आर्जव धर्म धरें।
कपट त्याग आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥१५॥

ॐ ह्रूं छलकपटहर्त्ता उत्तमार्जवधर्मधुरन्धर श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

लोभ पाप का बाप रहा, शौच धर्म वह घात रहा।
लोभ त्याग आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥१६॥

ॐ ह्रूं लोभतृष्णाहर्त्ता उत्तमशौचधर्मधुरन्धर श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

सत्य धर्म की कल्याणी, हित-मित-प्रिय बोलें वाणी।
सत्य कथन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥१७॥

ॐ ह्रूं असत्यविकल्पहर्त्ता उत्तमसत्यधर्मधुरन्धर श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

इन्द्रिय जीव सुरक्षा को, चरणाचरण व्यवस्था को।
शुभ संयम आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥१८॥

ॐ ह्रूं असंयमहर्त्ता उत्तमसंयमधर्मधुरन्धर श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

इच्छा पूर्ण निरोध करें, कर्म निर्जरा शोध करें।
उत्तम तप आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥१९॥

ॐ ह्रूं इच्छाहर्त्ता उत्तमतपधर्मधुरन्धर श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

दोनों परिग्रह त्याग करें, नग्न हुये वैराग्य धरें।
श्रेष्ठ त्याग आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥२०॥

ॐ ह्रूं पराकर्षणहर्त्ता उत्तमत्यागधर्मधुरन्धर श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

पर का कुछ ना अपना हो, अपना कुछ ना पर का हो।
आकिंचन आचार्य धरें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥२१॥

ॐ ह्रूं भेद-भावहर्त्ता उत्तमआकिंचनधर्मधुरन्धर श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

ब्रह्मचर्य व्रतराज रहा, ब्रह्मरमण साम्राज्य कहा।
ब्रह्मचर्य आचार्य धरें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥२२॥

ॐ ह्रूं कुशीलहर्त्ता उत्तमब्रह्मचर्यधर्मधुरन्धर श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

पंचाचार

अष्टांगी निर्दोष रहा, दर्श दर्शनाचार कहा।
वह पालन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥२३॥

ॐ ह्रूं शंकादिकहर्त्ता दर्शनाचार गुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

अष्टांगी भव से तारे, ज्ञानाचार तत्त्व धारे।
वह पालन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥२४॥

ॐ ह्रूं कुज्ञानभ्रमहर्त्ता ज्ञानाचार गुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

तेरह विध चारित्र अमल, वो चारित्राचार कमल।
वह पालन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥२५॥

ॐ ह्रूं कुचारित्रहर्त्ता चारित्राचार गुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

बारह विध निर्दोष धरें, तपाचार अरिहन्त कहें।
वह पालन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥२६॥

ॐ ह्रूं बालतपहर्त्ता तपाचार गुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

जो परिषह उपसर्ग सहें, प्रभु वह वीर्याचार कहें।
वह पालन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥२७॥

ॐ ह्रूं अरुचिहर्त्ता वीर्याचार गुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

षट्-आवश्यक

समता धरें सदा मन से, सुख-दुख आदिक के क्षण में।
सामायिक आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥२८॥

ॐ ह्रूं असमानताभावहर्त्ता सामायिक गुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

इक जिनवर के गुण गाना, उसे वन्दना पहचाना।
आवश्यक आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥२९॥

ॐ ह्रूं अनावश्यक विषयवस्तु हर्त्ता वन्दना (स्तुति) गुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

चौबीसों प्रभु की गाथा, कहना झुका-झुका माथा।
वो स्तवन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥३०॥

ॐ ह्रूं असमाधिहर्त्ता स्तवन (वन्दना) गुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

भूतकाल जो दोष हुये, प्रतिक्रमण से दूर हुये।
वही शुद्ध आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥३१॥

ॐ ह्रूं भूतचिंताहर्त्ता प्रतिक्रमण गुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

दोष हो सकें आगे जो, उन्हें पूर्व ही त्यागे जो।
प्रत्याख्यान आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥३२॥

ॐ ह्रूं भविष्य चिंताहर्त्ता प्रत्याख्यान गुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

तन ममता तज निज ध्यानी, कायोत्सर्ग करें स्वामी।
आवश्यक आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥३३

ॐ ह्रूं अहंकार-ममकार हर्त्ता कायोत्सर्ग गुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

<u>तीन गुप्तियाँ</u>

मन विकल्प रोकें सारे, मनोगुप्ति गुरुवर धारे।
निज रक्षा आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥३४॥

ॐ ह्रूं अशुभ विकल्प हर्त्ता मनोगुप्ति गुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

सभी वचन तज मौन धरें, वचन गुप्ति संग्राम हरें।
स्व-पर दया आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥३५॥

ॐ ह्रूं विसंवादहर्त्ता वचनगुप्ति गुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

तन व्यापार तजें सारे, काय गुप्ति मुद्रा धारे।
निज को जिन आचार्य करें, नमोस्तु हम तो भक्त करें॥३६॥

ॐ ह्रूं कायाकल्पकर्त्ता कायगुप्ति गुण सुशोभित श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

(दोहा)

शिक्षा दीक्षा मार्ग दे, गुण धारें छत्तीस।
ऐसे गुरु आचार्य को, हो नमोस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रूं समस्त विभ्रम हर्त्ता पथाश्रयदाता श्री आचार्य देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

(श्री उपाध्याय देव के २५ मूलगुण संबंधी अर्घ्य)

पहला आचारांग दे, मुनि श्रावक-आचार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥१॥

ॐ ह्रौं दुराचारहर्त्ता आचारांग ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

दूजा सूत्रकृतांग दे, धर्म क्रिया व्यवहार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥२॥

ॐ ह्रौं दुर्व्यवहारहर्त्ता सूत्रकृतांग ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

तीसरा स्थानांग जो, कहे जीव घर वार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥३॥

ॐ ह्रौं स्थानविवादहर्त्ता स्थानांग ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

चौथा समवायांग जो, सम ही सभी विचार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥४॥

ॐ ह्रौं असमानताहर्त्ता समवायांग ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

व्याख्या प्रज्ञप्ति कहे, अस्ति नास्ति चितधार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥५॥

ॐ ह्रीं समस्तविधाहर्त्ता व्याख्याप्रज्ञप्तिअंग ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

ज्ञातृकथा का अंग दे, पुरुष शलाका सार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥६॥

ॐ ह्रीं पदविवादहर्त्ता ज्ञातृकथांग ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

उपासकाध्ययनांग दे, ग्रहि प्रतिमा संस्कार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥७॥

ॐ ह्रीं दुष्क्रियाहर्त्ता उपासकाध्ययनांग ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

अष्टम अन्तकृतांग दे, दसो अंतकृत तार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥८॥

ॐ ह्रीं दुष्कालहर्त्ता अन्तकृतांग ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

अनुत्तरदशांग में मुनि, दस-दस स्वर्ग सिधार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥९॥

ॐ ह्रीं दुर्गतिहर्त्ता अनुत्तरदशांग ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

अंग प्रश्नव्याकरण दे, निमित्तज्ञान विस्तार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥१०॥

ॐ ह्रीं दुर्निमित्तप्रभावहर्त्ता प्रश्नव्याकरणांग ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

जो विपाक सूत्रांग दे, सभी कर्म फलभार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥११॥

ॐ ह्रीं अशुभकर्मफलहर्त्ता विपाकसूत्रांग ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

जन्म ध्रौव्य व्यय वस्तु के, कहे पूर्व उत्पाद।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥१२॥

ॐ ह्रीं जन्म-जरा-मृत्यु दुःखहर्त्ता उत्पादपूर्व ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

कहे पूर्व अग्रायणी, नय दुर्नय भावार्थ।

उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥१३॥

ॐ ह्रौं दुराग्रहहर्त्ता अग्रायणीपूर्व ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

वीर्यानुवाद पूर्व जो, कहे वीर्य उपकार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥१४॥

ॐ ह्रौं दुर्बलताहर्त्ता वीर्यानुवादपूर्व ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

अस्ति नास्ति पूर्व दे, अस्तिनास्ति संसार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥१५॥

ॐ ह्रौं अशुभविकल्पहर्त्ता अस्तिनास्तिपूर्व ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

ज्ञानप्रवाद पूर्व कहे, सकल ज्ञान भण्डार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥१६॥

ॐ ह्रौं अज्ञानहर्त्ता ज्ञानप्रवादपूर्व ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

सत्यप्रवाद पूर्व कहे, गुप्ति समिति सत्कार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥१७॥

ॐ ह्रौं वचनविकल्पहर्त्ता सत्यप्रवाद ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

आत्मप्रवाद पूर्व कहे, नय निश्चय व्यवहार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥१८॥

ॐ ह्रौं वैरविरोधहर्त्ता आत्मप्रवादपूर्व ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

कर्मप्रवाद पूर्व कहे, कर्मों का विस्तार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥१९॥

ॐ ह्रौं कर्मबंधहर्त्ता कर्मप्रवादपूर्व ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

प्रत्याख्यान पूर्व कहे, किस विध अघ परिहार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥२०॥

ॐ ह्रौं पापास्रवहर्त्ता प्रत्याख्यानपूर्व ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

विद्यानुवाद पूर्व दे, विद्यामंत्र प्रसार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥२१॥

ॐ ह्रौं जादू-टोनाप्रभावहर्त्ता विद्यानुवादपूर्व ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

कल्याणवाद पूर्व दे, जिन कल्याण प्रचार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥२२

ॐ ह्रौं मार्गविभ्रमहर्त्ता कल्याणवादपूर्व ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

प्राणानुवाद पूर्व दे, तन्त्र-कुमन्त्र निवार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥२३॥

ॐ ह्रौं ज्योतिषविद्याभयहर्त्ता प्राणानुवादपूर्व ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

क्रिया विशाल पूर्व कहे, चौसठ कलाधिकार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥२४॥

ॐ ह्रौं कलाविकृतिहर्त्ता क्रियाविशालपूर्व ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

त्रिलोक बिन्दु पूर्व कहे, लोक मोक्ष सरकार।
उपाध्याय जानें जिन्हें, नमोस्तु बारम्बार॥२५॥

ॐ ह्रौं संसारभ्रमणहर्त्ता त्रिलोकबिन्दुपूर्व ज्ञानगुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

(सोरठा)

गुण धारें पच्चीस, करें स्व-पर उद्घोष जो।
हो नमोस्तु धर शीश, दिये तत्त्व निर्दोष जो॥

ॐ ह्रौं छद्मावस्थाहर्त्ता ज्ञानतत्त्व गुणधारी श्री उपाध्याय देवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

श्री साधुदेव के २८ मूलगुण संबंधी अर्घ्य

पाँच महाव्रत (सखी)

सब हिंसा पाप निवारी, अहिंसा महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥१॥

ॐ ह्रः विश्वहिंसापापहर्त्ता अहिंसा महाव्रतधारी साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

सब झूठ पाप संहारी, मुनि सत्यमहाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥२॥

ॐ ह्रः विश्वझूठपापहर्त्ता सत्य महाव्रतधारी साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

सब चोरी पाप निवारी, जो अचौर्य महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥३॥

ॐ ह्रः विश्वचोरीपापहर्त्ता अचौर्य महाव्रतधारी साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निज रसिया त्यागे नारी, ब्रह्मचर्य महाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥४॥

ॐ ह्रः अब्रह्मपापहर्त्ता ब्रह्मचर्य महाव्रतधारी साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

जो परिग्रह मूर्च्छा हारी, अपरिग्रहमहाव्रत धारी।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥५॥

ॐ ह्रः विश्वपरिग्रहपापहर्त्ता अपरिग्रह महाव्रतधारी साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

पंच समितियाँ

मुनि निरख-निरख कर चालें, मुनि भाषा समिति पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥६॥

ॐ ह्रः यात्रा विकल्पहर्त्ता ईर्यासमितिपालक साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

मुख व्यर्थ न अपना खोलें, मुनि भाषा समिति पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥७॥

ॐ ह्रः वाणीविवादहर्त्ता भाषासमितिपालक साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

रसपान शुद्ध कुछ करलें, सो एषणा समिति पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥८॥

ॐ ह्रः आहारविकृतिहर्त्ता एषणासमितिपालक साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

लें वस्तु देख या धर लें, आदान निक्षेपण पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥९॥

ॐ ह्रः वस्तुविकल्पहर्त्ता आदाननिक्षेपणसमितिपालक साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

मल-मूत्र विधिवत् तज लें, व्युत्सर्ग समिति जो पालें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥१०॥

ॐ ह्रः मल-मूत्र विकल्पहर्त्ता व्युत्सर्गसमितिपालक साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

पंचेन्द्रियनिरोध

स्पर्शन आठविध जीतें, शुद्धातम छूना सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥११॥

ॐ ह्रः त्वचाविकल्पहर्त्ता स्पर्शनेन्द्रियविषय विजेता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

रस पाँच तरह के जीतें, परमात्मा चखना सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥१२॥

ॐ ह्रः रसविकृतिहर्त्ता रसनेन्द्रिय विषय विजेता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

दुर्गन्ध सुगन्धी जीतें, चारित्र सूंघना सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥१३॥

ॐ ह्रः गंधविकृतिहर्त्ता घ्राणेन्द्रिय विषय विजेता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

पचरंगा दर्शन जीतें, निज सम्यग्दर्शन सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥१४॥

ॐ ह्रः दृष्टिदोषहर्त्ता चक्षुरिन्द्रय विषय विजेता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

स्वरसात तरह के जीतें, संगीत आत्म का सीखें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥१५॥

ॐ ह्रः कर्णदोषहर्त्ता कर्णेन्द्रिय विषय विजेता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

षट्-आवश्यक

जो सब में समता धारें, निज शुद्ध स्वरूप विचारें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥१६॥

ॐ ह्रः ऊँच-नीच विकल्पहर्त्ता सामायिक आवश्यक कर्त्ता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

गुण एक प्रभु के गायें, थुति करके पुण्य बढ़ायें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥१७॥

ॐ ह्रः एकता अभावहर्त्ता स्तुति आवश्यक कर्त्ता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

गुण चौबीसों के गाना, मुनि करें वन्दना नाना।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥१८॥

ॐ ह्रः भेद-भावहर्त्ता वन्दना आवश्यक कर्त्ता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

पिछले दोषों को हरते, सो प्रतिक्रमण मुनि करते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥१९॥

ॐ ह्रः विस्मयविषयहर्त्ता प्रतिक्रमण आवश्यक कर्त्ता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

अगले दोषों को हर लें, सो प्रत्याख्यान नियम लें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥२०॥

ॐ ह्रः स्मृतिदोषहर्त्ता प्रत्याख्यान आवश्यक कर्त्ता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निज तन से मोह नशायें, जो कायोत्सर्ग रचायें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥२१॥

ॐ ह्रः सम्मोहहर्त्ता कायोत्सर्ग आवश्यक कर्त्ता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

सात अन्य गुण

कुछ निशि में तृण पर सोना, या भू पर त्याग विछौना।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥२२

ॐ ह्रः निद्रादोषहर्त्ता भूशयन मूलगुणधर्त्ता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

नहिं मुनिजन कभी नहाते, शृंगार करें न कराते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥२३॥

ॐ ह्रः शृंगार(फैशन) विकल्पहर्त्ता अस्नान मूलगुणधर्त्ता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

मुनि नग्न दिगम्बर रहते, उपसर्ग परीषह सहते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥२४॥

ॐ ह्रः अमर्यादा विकल्पहर्त्ता नगनत्व मूलगुणधर्त्ता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

दातून करें न मंजन, मुनि धरते अदंत धोवन।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥२५॥

ॐ ह्रः दन्तसमस्याहर्त्ता अदन्तधोवन मूलगुणधर्त्ता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

इक बार करें मुनि भोजन, दिन में विधिवत् कर शोधन।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥२६॥

ॐ ह्रः योगी-भोगी-रोगी समस्याहर्त्ता एकभुक्ति मूलगुणधर्त्ता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

मुनि मौन खड़े हो खायें, आसक्ति दोष नशायें।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥२७॥

ॐ ह्रः संधिदोषहर्त्ता एक-आसन मूलगुणधर्त्ता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

मुनि बाल सजाना तजते, केशलौंच दयालु करते।
मुनियों का संघ सुहाना, करके नमोस्तु सुख पाना॥२८॥

ॐ ह्रः केशविकल्पहर्त्ता केशलौंच मूलगुणधर्त्ता साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

(दोहा)

पता पताका पूज्य जो, गुण धर अट्ठाबीस।
धर्मशान मुनि साधु को, हो नमोस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रः विकृतिविकल्पहर्त्ता त्रयोननवकोटि साधुदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

जिनधर्म अर्घ्य (ज्ञानोदय)

लोकालोक तीन कालों में, तत्त्वकथन में दक्ष रहा।
जियो और जीने दो दस विध, वीतराग सर्वज्ञ कहा॥

वस्तु स्वरूप, हरे कर्मों को, जो चरित्र पर तिष्ठ रहा।
पूज्य अहिंसा परमो धर्मः, करे मोक्ष सो इष्ट रहा॥

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, जय जिनधर्म महान्।
द्रव्यभावसह नमोस्तु कर, भक्त बनें भगवान॥

ॐ ह्रः संसारदुःखकर्मचक्रहर्त्ता उत्तमसौख्यकर्त्ता श्री जिनधर्मदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

जिनागम अर्घ्य

द्वादशांग जिन दिव्य देशना, जहाँ चार अनुयोग कहे।
अनेकान्त स्याद्वादमयी श्रुत, जिसको गणधर गूँथ रहे॥
आत्म भेद विज्ञान प्रदाता, प्रमाण नय मय ग्रंथ रहे।
पूज्य जिनागम सर्व हितैषी, भव उद्धारक पंथ रहे॥
तत्त्व पदारथ द्रव्य का, दिये जिनागम ज्ञान।
द्रव्य-भाव-सह नमोस्तु कर, भक्त बनें भगवान॥

ॐ ह्रः त्रिलोकपूज्य विजय प्रदाता श्रीजिनागमदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

जिनचैत्य अर्घ्य

तीन लोक के तीन काल के, नव देवों की प्रतिमायें।
कृत्रिम और अकृत्रिम सुन्दर, बिम्ब चलाचल मन भायें॥
धातु रत्न पाषाण काष्ठ की, मूर्ति सचित्ताचित्त सभी।
जिन मूरत निज सूरत बदले, अतः कहे हैं चैत्य यही॥
चिदानंद चैतन्य दें, पूजित चैत्य महान्।
द्रव्य-भाव-सह नमोस्तु कर, भक्त बनें भगवान॥

ॐ ह्रः त्रिलोकत्रिकाल संबंधी कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्यदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

जिनचैत्यालय अर्घ्य

जिन बिम्बों के जिनायतन जो, आलय मंदिर भवन रहे।
धातु रत्न भू पत्थर वाले, कृत्रिमाकृत्रिम सदन कहे॥
तीन लोक के तीन काल के, मंगल उत्तम शरण कहे।
नव देवों के पूज्य जिनालय, सदा-सदा जयवन्त रहे॥

समवसरण के रूप हैं, जिनशासन की शान।
द्रव्य-भाव-सह नमोस्तु कर, भक्त बनें भगवान॥

ॐ ह्रः त्रिलोक-त्रिकाल संबंधी कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्यालयदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

(पूर्णार्घ्य)

प्रभु अरिहन्तों सब सिद्धों को, जैनाचार्य पाठकों को।
जो अनमोल धरें रत्नत्रय, ऐसे साधु साधकों को॥
श्री जिनधर्म जिनागम वा जिन-चैत्य तथा चैत्यालय को।
समगं-समगं पृथक-पृथक हम, करें नमोस्तु कर्म क्षय को॥
परम तत्त्व नव देवता, हम भक्तों के प्राण।
द्रव्य-भाव-सह नमोस्तु कर, भक्त बनें भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्यउपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

(सम्पूर्णार्घ्य)

अर्घ्य एक सौ अड़तालीस ले, जिन नवदेवा पूज रहे।
जिन मंगल से निज मंगल को, जय-जयकारे गूँज रहे॥
अनुष्ठान अध्यात्म सहित हो, चिदानन्द चैतन्य रहे।
ग्रह परिग्रह भय कर्म हरण हो, विश्व सदैव प्रसन्न रहे॥
सार भूत नव देवता, धर्म जगत् की जान।
द्रव्य-भाव-सह नमोस्तु कर, भक्त बनें भगवान॥

ॐ ह्रः शतैकअष्टचत्वारिंशद कोष्ठस्थापिताय श्री नवदेवेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

(दोहा)

परम पूज्य नव देवता, शरणोत्तम मांगलीक।
ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि पा, हमें मिले आशीष॥

(पुष्पांजलिं....)

-: जाप्य :-

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्यउपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः

जयमाला

(दोहा)

परम तीर्थ नव देवता, तारणतरण जहाज।
चरण शरण जयमालिका, सादर गायें आज॥

(ज्ञानोदय)

अनुष्ठान पुरुषार्थ क्रिया कर, तत्त्व लक्ष्य जो पा न सकें।
घर होकर भी भटक रहे जो, अपने घर तक आ न सकें॥
बाहर विखरी पड़ी सम्पदा, अन्दर तक जो ला न सकें।
काम भोग सब सुलभ रहे पर, भोग सके कुछ खा न सकें॥१॥
प्यारी-प्यारी वाणी पाकर, मधुर बोल गुण गा न सकें।
सुन्दर-सुन्दर आँखे पाकर, प्रभु दर्शन को जा न सकें॥
स्वस्थ मनोहर कान प्राप्त कर, गुरु-वाणी सुन ध्या न सकें।
पैर घूमते दुनियाँ लेकिन, तीरथ-मंदिर जा न सकें॥२॥
यहाँ मनोबल जिनका टूटे, उनको क्या घबराना तो।
द्रव्यभावमय नवदेवों को, सादर मात्र मनाना तो॥
चाँदी-चाँदी सोना-सोना, पैसा-पैसा हो इतना।
डूब-ऊब जब जाओ भैया, मोक्षमार्ग पर आ टिकना॥३॥
पूज्य पंच कल्याणक प्रभु के, दोष घाति बिन उच्च उठे।
छ्यालीस मूलगुणी अरिहन्ता, दिये देशना भक्त झुके॥
सकल कर्म हर लोक शिखर पर, चिदानंद चैतन्य हुये।
अष्टगुणी प्रभु सिद्ध महन्ता, हम नमोस्तु कर धन्य हुये॥४॥
शिक्षा-दीक्षा दण्ड प्रदाता, गुरु आचार्य संघ स्वामी।
श्रमण संस्कृति के संवाहक, शरण प्राप्ति को प्रणमामि॥
उपाध्याय उत्कृष्ट रूप से, अंग पूर्व को जान रहे।
मुक्ति मुक्तिपथ की शिक्षा दें, जिनको सदा प्रणाम रहे॥५॥
जैनधर्म के पता पताका, नग्न दिगम्बर हैं मुनिजन।

पूज्य पंचपरमेष्ठी में बस, नग्नरूप का हो दर्शन॥
श्री जिनधर्म जिनागम प्यारा, पूज्य चैत्य चैत्यालय हैं।
नव देवा आदर्श बनाकर, भक्त प्राप्त करते जय हैं॥६॥
श्रद्धा भक्तियाँ नव देवों की, पुण्य खजाना खूब भरें।
नवग्रह की भय पीड़ा हर ले, कालसर्प भय भूत हरें॥
बाधा दुश्मन मदद करें सब, पाप निर्जरा मूल करें।
मुक्ति लक्ष्मी प्रसन्न होकर, क्षमा सभी की भूल करे॥७॥
हे! नवदेवा हम भक्तों पर, कृपा मात्र इतनी कर दो।
मस्तक में ओंकार भरो प्रभु, तन में रत्नत्रय भर दो॥
मनो हृदय में णमोकार हो, नवदेवा हो आतम में।
'सुव्रत' टंकोत्कीर्ण रूप से, रमें मोक्ष परमातम में॥८॥

(सोरठा)

नवदेवों का नाम, काम बनायें भक्त के।
हो नमोस्तु अविराम, भक्ति ध्यान शिव तत्त्व दे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्यउपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

(दोहा)

प्रथम समुच्चय जो रहे, अंतिम उपसंहार।
नव देवों को भक्ति वश, नमोस्तु बारम्बार॥
करें पूज्य नव देवता, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पाञ्जलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं...)

(प्रशस्ति)

नगर कटेरा है जहाँ, सुपार्श्वनाथ भगवान।
वहीं लेख पूरे हुये, नवदेवता विधान॥
दो हजार चौदह गुरु, अठारान्त तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु-प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(हरिगीतिका)

नवदेवताओं की उतारें आज हम भी आरती।
स्वीकार अब कर लो नमोऽस्तु, हे! जगत के सारथी॥
जो अर्चना करते उन्हें तुम पार भव से उतारते।
तप त्याग संयम जो धरें तकदीर उनकी सँवारते॥
हम तो नमोऽस्तु कर रहे बस हाथ लेकर आरती।
स्वीकार...॥१॥

नहि जल न चंदन हैं न अक्षत पुष्प न नैवेद्य हैं।
मणिदीप ना ही धूप फल हैं अर्घ्य न पूर्णार्घ्य हैं॥
नवदेवता फिर भी मनाते कर नमोऽस्तु आरती।
स्वीकार...॥२॥

जिनतत्त्व का निज में अँधेरा आप बिन मिटता नहीं।
स्वानंद का निज का उजाला आप बिन मिलता नहीं॥
'सुव्रत' उजाला पाएं प्रभु स्वानंद की हो भारती।
स्वीकार...॥३॥

===